११. निर्माणों के पावन युग में

– अटल बिहारी वाजपेयी

श्रवणीय

'वसुधैव कुटुंबकम्' विषय पर समूह में चर्चा कीजिए और प्रभावशाली मुद्दों को सुनाइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● इस सुवचन का अर्थ बताने के लिए कहें । ● आज के युग में विश्व शांति की अनिवार्यता के बारे में पूछें । ● पूरे विश्व में एकता लाने के लिए आप क्या कर सकते हैं, बताने के लिए प्रेरित करें ।

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

माना अगम अगाध सिंधु है संघर्षों का पार नहीं है,
किंतु डूबना मँझधारों में साहस को स्वीकार नहीं है,
जटिल समस्या सुलझाने को नूतन अनुसंधान न भूलें !!

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

शील, विनय, आदर्श, श्रेष्ठता तार बिना झंकार नहीं है,
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी यदि नैतिक आधार नहीं है,
कीर्ति कौमुदी की गरिमा में संस्कृति का सम्मान न भूलें !!

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

आविष्कारों की कृतियों में यदि मानव का प्यार नहीं है,
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है प्राणी का उपकार नहीं है,
भौतिकता के उत्थानों में जीवन का उत्थान न भूलें !!

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

परिचय

जन्म : २५ दिसंबर १९२४ (म.प्र.)
परिचय : अटल बिहारी वाजपेयी जी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री होने के साथ–साथ कवि, पत्रकार व प्रखर वक्ता भी हैं । आपकी रचनाएँ जीवन की जिजीविषा, राष्ट्रप्रेम एवं ओज से परिपूर्ण हैं । **प्रमुख कृतियाँ :** मेरी इक्यावन कविताएँ (कविता संग्रह) कुछ लेखः कुछ भाषण, बिंदु–बिंदु विचार, अमर बलिदान (गद्‌य रचनाएँ)

पद्‌य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली लोकोत्तर आनंद देने वाली रचना कविता होती है। इसमें दृश्य की अनुभूतियों को साकार किया जाता है।

इस कविता में वाजपेयी जी ने नूतन अनुसंधान, संस्कृति के सम्मान, जगत का कल्याण–उत्थान करने के साथ–ही–साथ चरित्र निर्माण करने को विशेष महत्व प्रदान किया है।

कल्पना पल्लवन

''भौतिकता के उत्थानों में जीवन का उत्थान न भूलें ।''

इस पंक्ति को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

वसुधा (स्त्री.सं.) = पृथ्वी
अगम (वि.) = अपार
अगाध (वि.) = अथाह
मँझधार (सं.स्त्री.) = लहरों के बीचोंबीच
कौमुदी (स्त्री.सं.) = चाँदनी
भौतिकता (स्त्री.सं.) = सांसारिकता
उत्थान (पुं.सं.) = उन्नति

8H0U2B

संभाषणीय

स्वातंत्र्योत्तर भारत के इतिहास के बारे में चर्चा कीजिए ।

- उन्नीस सौ साठ से अस्सी का कालखंड
- उन्नीस सौ इक्यासी से दो हजार का कालखंड
- दो हजार एक से अब तक का कालखंड

पठनीय

'पर्यावरण और मानव' पर आधारित पथनाट्य (नुक्कड़ नाट्य) पढ़कर प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

'देश हित के लिए आप क्या करते हैं', लिखिए ।

आसपास

अपने आसपास/परिवेश में घटित होने वाली समाज विघातक घटनाओं की रोकथाम से संबंधित अपना मत प्रस्तुत कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) निर्माणों के पावन युग में हम इन्हें न भूलें

१.
२.
३.
४.

(२) कृति पूर्ण कीजिए :-

(ख) होना जरुरी

- आविष्कारों में → ....
- विज्ञान में → ....

पाठ से आगे

स्वामी विवेकानंद जी की जीवनी का अंश पढ़कर टिप्पणी लिखिए ।

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़िए तथा उचित शब्द रिक्त स्थानों में लिखिए :-

१. आर्यभट्ट ने शून्य की .... की । (खोज, अनुसंधान, आविष्कार)
२. प्रगति के लिए आपसी .... आवश्यक है । (ईर्ष्या, भागदौड़, स्पर्धा)
३. कार्यक्रम को शुरू करने के लिए अध्यक्ष महोदय की .... चाहिए । (अनुमति, आज्ञा, आदेश)
४. काले बादलों को देखकर बारिश की .... है । (आशंका, संभावना, अवसर)
५. सड़क-योजना में सैकड़ों मजदूरों को .... मिला । (निर्माण, श्रम, रोजगार)

रचना बोध

....
....
....